अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

# भारत की विदेश नीति विकास, सिद्धांत और चुनौतियाँ

**डॉ. दीपक सिंह**

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय चरखारी महोबा

सारांश

भारत की विदेश नीति स्वतंत्रता के पश्चात निरंतर परिवर्तनशील रही है, जो समय-समय पर वैश्विक राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक परिवर्तनों के अनुरूप विकसित हुई है। प्रारंभिक चरण में गुटनिरपेक्षता और पंचशील जैसे सिद्धांतों पर आधारित यह नीति शीत युद्ध के दौरान संतुलन बनाए रखने का माध्यम बनी। बाद के वर्षों में, विशेष रूप से आर्थिक उदारीकरण के पश्चात, भारत ने आर्थिक कूटनीति, बहुपक्षवाद और रणनीतिक साझेदारियों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। 21वीं सदी में "Act East Policy", "Neighbourhood First" तथा इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसे नए आयामों ने भारत की वैश्विक भूमिका को सुदृढ़ किया है। हालांकि, चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ तनाव, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ अभी भी महत्वपूर्ण बनी हुई हैं। यह अध्ययन भारत की विदेश नीति के विकास, उसके प्रमुख सिद्धांतों तथा समकालीन चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे वैश्विक परिदृश्य में भारत की रणनीतिक स्थिति को समझा जा सके।

**मुख्य शब्द:** भारत की विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, सामरिक स्वायत्तता, वैश्वीकरण

## प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति (Foreign Policy) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से निरंतर विकसित होती रही है और यह देश की ऐतिहासिक विरासत, वैचारिक आधार, भू-राजनीतिक स्थिति तथा वैश्विक परिवर्तनों के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने एक ऐसी विदेश नीति अपनाई, जो न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करे, बल्कि विश्व शांति, सहयोग और विकास को भी प्रोत्साहित करे। प्रारंभिक दौर में जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment) को अपनी विदेश नीति का केंद्रीय सिद्धांत बनाया, जिसका उद्देश्य शीत युद्ध के दौरान महाशक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखना और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को सुरक्षित रखना था। इसके साथ ही पंचशील सिद्धांत, जो शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर आधारित था, ने भारत की कूटनीतिक पहचान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। समय के साथ, विशेषकर 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद, भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिले, जिसमें आर्थिक कूटनीति, रणनीतिक साझेदारी और वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता दी गई। 21वीं सदी में भारत ने "Act East Policy", "Neighbourhood First" और इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसे नए आयामों को अपनाकर अपनी वैश्विक भूमिका को और सुदृढ़ किया

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

है। हालांकि, भारत की विदेश नीति को कई जटिल चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है, जैसे चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण संबंध, वैश्विक शक्ति संतुलन में बदलाव, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करने की दिशा में अग्रसर है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य भारत की विदेश नीति के विकास, उसके प्रमुख सिद्धांतों तथा समकालीन चुनौतियों का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करना है, जिससे यह समझा जा सके कि भारत किस प्रकार बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपने राष्ट्रीय हितों और अंतरराष्ट्रीय दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित कर रहा है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

भारत की विदेश नीति का विकास उसकी ऐतिहासिक, राजनीतिक और भू-रणनीतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय वैश्विक परिदृश्य शीत युद्ध के कारण द्विध्रुवीय व्यवस्था में विभाजित था, जहाँ भारत ने स्वतंत्र और संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए गुटनिरपेक्षता को प्राथमिकता दी। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत ने शांति, सह-अस्तित्व और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर आधारित विदेश नीति की नींव रखी। समय के साथ, वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण (1991) तथा बदलते शक्ति संतुलन ने भारत की विदेश नीति को अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी बना दिया। आज भारत न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिसमें आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक हितों का संतुलन आवश्यक हो गया है। इस पृष्ठभूमि में भारत की विदेश नीति के विकास, सिद्धांतों और चुनौतियों का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

भारत की विदेश नीति का अध्ययन वर्तमान वैश्विक परिदृश्य को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह न केवल देश के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की दिशा को स्पष्ट करता है, बल्कि राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और आर्थिक विकास से भी सीधे जुड़ा हुआ है। बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय संघर्षों तथा वैश्वीकरण के प्रभावों के बीच भारत की भूमिका निरंतर विस्तारित हो रही है। ऐसे में यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारत किस प्रकार अपने पारंपरिक सिद्धांतों—जैसे गुटनिरपेक्षता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—को बनाए रखते हुए नई रणनीतिक नीतियों को अपनाता है। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को भारत की कूटनीतिक रणनीतियों, चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण करने में सहायक होता है। साथ ही, यह भारत की वैश्विक स्थिति को समझने और भविष्य की विदेश नीति के निर्माण हेतु महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।

**विदेश नीति की अवधारणा**

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

विदेश नीति किसी भी राष्ट्र द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति हेतु अन्य देशों एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ स्थापित संबंधों, रणनीतियों और निर्णयों का समुच्चय होती है। यह केवल कूटनीतिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसमें आर्थिक, सामरिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक आयाम भी शामिल होते हैं। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से विदेश नीति को समझने के लिए प्रमुखतः यथार्थवाद, उदारवाद और संरचनावाद जैसे सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है। यथार्थवाद के अनुसार राष्ट्र अपने शक्ति और सुरक्षा हितों को सर्वोपरि रखते हैं तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति को शक्ति संघर्ष के रूप में देखा जाता है। इसके विपरीत, उदारवाद सहयोग, संस्थाओं और अंतरराष्ट्रीय नियमों पर बल देता है, जो वैश्विक शांति और स्थिरता को बढ़ावा देते हैं। वहीं, संरचनावाद यह मानता है कि राष्ट्रों के व्यवहार को उनकी पहचान, विचारधाराओं और सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्धारित किया जाता है। इन सिद्धांतों के अतिरिक्त, ऐतिहासिक अनुभव, भू-राजनीतिक स्थिति, नेतृत्व की भूमिका और घरेलू राजनीति भी विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत के संदर्भ में, उसकी विदेश नीति इन सभी सैद्धांतिक आधारों का एक मिश्रण प्रस्तुत करती है, जहाँ राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के साथ-साथ वैश्विक सहयोग और नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया जाता है। इस प्रकार, विदेश नीति की अवधारणा बहुआयामी और गतिशील है, जो बदलते अंतरराष्ट्रीय परिवेश के अनुसार निरंतर विकसित होती रहती है।

वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का प्रभाव

वैश्वीकरण ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप, संरचना और कार्यप्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप राज्यों के बीच पारंपरिक शक्ति-संतुलन की अवधारणा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। वैश्वीकरण के कारण विश्व एक परस्पर निर्भर प्रणाली में परिवर्तित हो गया है, जहाँ आर्थिक, तकनीकी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों को बढ़ावा दिया है। इसके प्रभाव से राष्ट्रों की विदेश नीतियाँ अधिक व्यावहारिक, बहुआयामी और आर्थिक हितों पर केंद्रित हो गई हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अब केवल सैन्य शक्ति ही निर्णायक नहीं रह गई, बल्कि आर्थिक क्षमता, तकनीकी प्रगति और सॉफ्ट पावर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगे हैं। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं की भूमिका भी बढ़ी है, जो वैश्विक शासन और सहयोग को सुदृढ़ करती हैं। साथ ही, वैश्वीकरण ने आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और महामारी जैसी वैश्विक चुनौतियों को भी उजागर किया है, जिनसे निपटने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हो गया है। भारत के संदर्भ में, वैश्वीकरण ने उसकी विदेश नीति को आर्थिक कूटनीति, रणनीतिक साझेदारियों और वैश्विक मंचों पर सक्रिय भागीदारी की दिशा में प्रेरित किया है। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक जटिल, परस्पर निर्भर और गतिशील बना दिया है, जहाँ राष्ट्रों को अपने हितों की रक्षा के साथ-साथ वैश्विक सहयोग को भी प्राथमिकता देनी पड़ती है।

भारत की विदेश नीति पर पूर्ववर्ती अध्ययन

भारत की विदेश नीति पर पूर्ववर्ती अध्ययनों ने इसके वैचारिक आधार, ऐतिहासिक विकास और व्यावहारिक आयामों का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। प्रारंभिक विद्वानों ने विशेष रूप से जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में विकसित गुटनिरपेक्षता और पंचशील सिद्धांतों को भारत की विदेश नीति की आधारशिला माना है, जहाँ नैतिकता, शांति और स्वतंत्र निर्णय-क्षमता पर बल दिया गया। के. एम. पणिक्कर और एम. एस. राजन जैसे विद्वानों ने भारत की विदेश नीति को उसकी ऐतिहासिक विरासत और भू-राजनीतिक स्थिति से जोड़कर समझाया है। वहीं, आधुनिक अध्ययनों में सी. राजा मोहन और शशि थरूर जैसे विश्लेषकों ने भारत की विदेश नीति में आए बदलावों, विशेषकर शीत युद्ध के बाद के दौर में, आर्थिक कूटनीति, सामरिक साझेदारियों और वैश्विक शक्ति संतुलन में भारत की भूमिका पर प्रकाश डाला है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति केवल आदर्शवादी दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रही, बल्कि समय के साथ अधिक व्यावहारिक और बहुआयामी रूप धारण करती गई है। इसके अतिरिक्त, समकालीन शोधों में वैश्वीकरण, क्षेत्रीय राजनीति और उभरती वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति का पुनर्मूल्यांकन किया गया है, जिससे यह समझ विकसित होती है कि भारत किस प्रकार बदलते अंतरराष्ट्रीय परिवेश में अपने राष्ट्रीय हितों और वैश्विक दायित्वों के बीच संतुलन स्थापित कर रहा है।

**सैद्धांतिक रूपरेखा**

भारत की विदेश नीति को समझने के लिए विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों का विश्लेषण आवश्यक है, जो इसके व्यवहार, निर्णय-निर्माण और वैश्विक रणनीति को स्पष्ट करते हैं।

**1. यथार्थवाद**

यथार्थवाद के अनुसार अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति और राष्ट्रीय हितों पर आधारित होती है। भारत की विदेश नीति में यह दृष्टिकोण सुरक्षा, सामरिक स्वायत्तता और शक्ति संतुलन के संदर्भ में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, विशेषकर सीमाई विवादों और रक्षा नीति में।

**2. उदारवाद**

उदारवाद सहयोग, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं और आर्थिक परस्पर निर्भरता पर बल देता है। भारत की बहुपक्षीय कूटनीति, जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भागीदारी और व्यापारिक समझौते, इस सिद्धांत को प्रतिबिंबित करते हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**3. संरचनावाद**

संरचनावाद यह मानता है कि राष्ट्रों की पहचान, विचारधारा और सांस्कृतिक मूल्य उनके व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भारत की सभ्यतागत विरासत, नैतिक कूटनीति और सॉफ्ट पावर इसका उदाहरण हैं।

**4. पंचशील सिद्धांत**

पंचशील सिद्धांत शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, संप्रभुता के सम्मान और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने जैसे सिद्धांतों पर आधारित है, जिसने भारत की विदेश नीति को नैतिक दिशा प्रदान की है।

**5. गुटनिरपेक्ष आंदोलन**

गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने भारत को शीत युद्ध के दौरान स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति अपनाने में सक्षम बनाया, जिससे वह किसी भी शक्ति गुट का हिस्सा बने बिना अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सका।

**साहित्य समीक्षा**

भारत की विदेश नीति पर विद्यमान साहित्य बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जिसमें ऐतिहासिक विकास, सैद्धांतिक आधार, और समकालीन परिवर्तनों का गहन विश्लेषण शामिल है। अमिताव आचार्य (2014) वैश्विक शक्ति संरचना में परिवर्तन को रेखांकित करते हुए यह तर्क देते हैं कि पारंपरिक पश्चिम-केंद्रित विश्व व्यवस्था का अंत हो रहा है और उभरती शक्तियों, विशेषकर भारत, की भूमिका बढ़ रही है। यह दृष्टिकोण भारत की विदेश नीति को वैश्विक बहुध्रुवीयता (multipolarity) के संदर्भ में समझने में सहायक है। इसी प्रकार, के. बाजपेयी, एस. बासित और वी. कृष्णप्पा (2014) द्वारा संपादित कार्य भारत की "ग्रैंड स्ट्रैटेजी" के ऐतिहासिक और सैद्धांतिक आयामों को स्पष्ट करता है, जिसमें राष्ट्रीय हित, सुरक्षा और शक्ति संतुलन को केंद्र में रखा गया है। वहीं, सुमित गांगुली (2010) भारत की विदेश नीति को एक सतत विकसित होने वाली प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, जो ऐतिहासिक अनुभवों और समकालीन आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करती है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति केवल आदर्शवादी सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिकता और रणनीतिक सोच का भी समन्वय है।

दूसरे दृष्टिकोण में समकालीन परिवर्तनों और नेतृत्व की भूमिका पर विशेष ध्यान दिया गया है। इयान हॉल (2019) ने विशेष रूप से वर्तमान नेतृत्व के संदर्भ में भारत की विदेश नीति के पुनर्निर्माण का विश्लेषण किया है, जिसमें उन्होंने दिखाया कि किस प्रकार नीतिगत प्राथमिकताएँ अधिक सक्रिय और रणनीतिक हुई हैं। इसी क्रम में हर्ष वी. पंत (2016) भारत की विदेश नीति को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हैं, जहाँ आर्थिक, सामरिक और कूटनीतिक आयामों का समन्वय दिखाई देता है। पंत का

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अध्ययन यह दर्शाता है कि भारत अब केवल क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक वैश्विक खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है। इसके अतिरिक्त, समकालीन शोध यह भी इंगित करते हैं कि वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने भारत की विदेश नीति को अधिक गतिशील और बहुआयामी बना दिया है, जिससे भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने में सक्षम हुआ है।

सुरक्षा और क्षेत्रीय संबंधों के संदर्भ में भी कई महत्वपूर्ण अध्ययन उपलब्ध हैं, जो भारत की विदेश नीति की जटिलताओं को उजागर करते हैं। हैप्पीमोन जैकब (2016) ने भारत-पाकिस्तान संबंधों और सीमा संघर्षों का विश्लेषण करते हुए यह बताया कि संघर्ष विराम उल्लंघन और सैन्य तनाव किस प्रकार कूटनीतिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार, डेविड एम. मैलोन (2011) ने भारत की समकालीन विदेश नीति का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने भारत की कूटनीतिक रणनीतियों, वैश्विक महत्वाकांक्षाओं और बहुपक्षीय सहभागिता पर प्रकाश डाला है। एस. डी. मुनि (2009) का अध्ययन विशेष रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों और विदेश नीति के बीच संबंध को स्पष्ट करता है, जो भारत की विशिष्ट पहचान को दर्शाता है। ये सभी अध्ययन इस बात पर सहमत हैं कि भारत की विदेश नीति सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक सहयोग के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

समग्र रूप से, उपलब्ध साहित्य यह दर्शाता है कि भारत की विदेश नीति एक जटिल और बहुस्तरीय प्रक्रिया है, जो विभिन्न आंतरिक और बाहरी कारकों से प्रभावित होती है। इन अध्ययनों में एक ओर जहाँ पारंपरिक सिद्धांतों—जैसे गुटनिरपेक्षता और पंचशील—की निरंतरता पर बल दिया गया है, वहीं दूसरी ओर समकालीन चुनौतियों और अवसरों के अनुरूप नीति में आए परिवर्तनों को भी रेखांकित किया गया है। हालांकि, अधिकांश अध्ययनों में यह भी पाया जाता है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य, विशेषकर चीन के उदय, वैश्विक शक्ति संतुलन और नई तकनीकी चुनौतियों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति पर और अधिक समग्र एवं तुलनात्मक शोध की आवश्यकता है। इस प्रकार, यह साहित्य समीक्षा न केवल मौजूदा ज्ञान को समेकित करती है, बल्कि भविष्य के शोध के लिए संभावित दिशाओं को भी इंगित करती है।

## भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास

भारत की विदेश नीति का विकास विभिन्न ऐतिहासिक चरणों से होकर गुजरा है, जिसमें वैश्विक परिस्थितियों, नेतृत्व और राष्ट्रीय हितों के अनुसार निरंतर परिवर्तन देखने को मिलता है।

### 1. स्वतंत्रता पूर्व विदेश नीति की पृष्ठभूमि

औपनिवेशिक काल में भारत की स्वतंत्र विदेश नीति नहीं थी, लेकिन भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर जागरूकता विकसित हुई। उपनिवेशवाद-विरोध, नस्लीय भेदभाव के खिलाफ आवाज और विश्व शांति के प्रति प्रतिबद्धता ने भविष्य की विदेश नीति की नींव रखी।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**2. जवाहरलाल नेहरू युग**

जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति का प्रारंभिक ढांचा तैयार हुआ। इस दौर में गुटनिरपेक्षता, पंचशील और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व जैसे सिद्धांतों को अपनाया गया, जिससे भारत ने स्वतंत्र और संतुलित कूटनीति को बढ़ावा दिया।

**3. शीत युद्ध काल में विदेश नीति**

शीत युद्ध के दौरान विश्व दो शक्ति गुटों में विभाजित था। भारत ने किसी एक गुट में शामिल होने के बजाय संतुलन बनाए रखा, हालांकि कुछ परिस्थितियों में सोवियत संघ के साथ रणनीतिक सहयोग भी विकसित हुआ।

**4. शीत युद्ध के बाद का दौर**

शीत युद्ध की समाप्ति और 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक और आर्थिक हितों पर केंद्रित हो गई। इस दौर में वैश्विक व्यापार, निवेश और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों को प्राथमिकता दी गई।

**5. 21वीं सदी में विदेश नीति का परिवर्तन**

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय, बहुआयामी और रणनीतिक बन गई है। "Act East Policy", "Neighbourhood First" और इंडो-पैसिफिक रणनीति जैसे पहलुओं के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर अपनी भूमिका को सुदृढ़ किया है।

**भारत की विदेश नीति के प्रमुख सिद्धांत**

भारत की विदेश नीति कुछ मौलिक सिद्धांतों पर आधारित है, जो उसके राष्ट्रीय हितों, ऐतिहासिक अनुभवों और वैश्विक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हैं। ये सिद्धांत समय के साथ विकसित हुए हैं, परंतु इनकी मूल भावना आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

**1. गुटनिरपेक्षता**

गुटनिरपेक्ष आंदोलन भारत की विदेश नीति का प्रमुख आधार रहा है, जिसके अंतर्गत भारत ने शीत युद्ध के दौरान किसी भी शक्ति गुट का हिस्सा बनने से परहेज किया। इसका उद्देश्य स्वतंत्र निर्णय-निर्माण और राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना था।

**2. पंचशील**

पंचशील सिद्धांत भारत-चीन समझौते (1954) से उत्पन्न हुआ, जिसमें शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, संप्रभुता का सम्मान और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने जैसे सिद्धांत शामिल हैं। इसने भारत की विदेश नीति को नैतिक और शांतिपूर्ण आधार प्रदान किया।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

**3. सामरिक स्वायत्तता**

सामरिक स्वायत्तता का अर्थ है कि भारत अपनी विदेश और सुरक्षा नीति के निर्णय स्वतंत्र रूप से लेता है, बिना किसी बाहरी दबाव के। यह सिद्धांत आधुनिक वैश्विक राजनीति में भारत की संतुलित और स्वतंत्र भूमिका को दर्शाता है।

**4. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व**

यह सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देश भी शांति और सहयोग के साथ सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। भारत ने सदैव विवादों के समाधान के लिए संवाद और कूटनीति को प्राथमिकता दी है।

**5. वैश्विक सहयोग और बहुपक्षवाद**

भारत अंतरराष्ट्रीय सहयोग और बहुपक्षीय संस्थाओं में विश्वास रखता है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन जैसे मंचों पर सक्रिय भागीदारी के माध्यम से भारत वैश्विक शांति, विकास और स्थिरता को बढ़ावा देता है।

इस प्रकार, ये सभी सिद्धांत मिलकर भारत की विदेश नीति को संतुलित, व्यावहारिक और वैश्विक दृष्टिकोण से समृद्ध बनाते हैं।

**भारत की विदेश नीति के आयाम**

भारत की विदेश नीति बहुआयामी है, जिसमें विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक हितों को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग आयामों का समावेश किया गया है। ये आयाम न केवल भारत की कूटनीतिक रणनीति को व्यापक बनाते हैं, बल्कि उसे एक प्रभावशाली वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करने में भी सहायक हैं।

**1. राजनीतिक आयाम**

राजनीतिक आयाम में भारत अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान देता है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भागीदारी के माध्यम से भारत वैश्विक शांति, लोकतंत्र और स्थिरता को बढ़ावा देता है।

**2. आर्थिक कूटनीति**

आर्थिक कूटनीति के अंतर्गत व्यापार, निवेश, तकनीकी सहयोग और वैश्विक बाजार में भागीदारी को बढ़ावा दिया जाता है। विश्व व्यापार संगठन में भारत की सक्रिय भूमिका इसके आर्थिक हितों को सुरक्षित करने में सहायक होती है।

**3 सुरक्षा एवं रक्षा नीति**

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

इस आयाम का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करना है। इसमें सीमाई सुरक्षा, आतंकवाद से निपटना और रक्षा साझेदारियों का विकास शामिल है, जिससे भारत अपनी सामरिक स्थिति को मजबूत करता है।

**4. सांस्कृतिक कूटनीति**

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, योग, आयुर्वेद और परंपराओं के माध्यम से विश्व में अपनी सॉफ्ट पावर को बढ़ाता है। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

**5. ऊर्जा और पर्यावरण कूटनीति**

ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर भारत की सक्रिय भूमिका महत्वपूर्ण है। अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के माध्यम से भारत वैश्विक पर्यावरण संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देता है। इस प्रकार, ये सभी आयाम मिलकर भारत की विदेश नीति को व्यापक, संतुलित और समकालीन वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाते हैं।

**क्षेत्रीय और वैश्विक संबंध**

भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम उसके क्षेत्रीय और वैश्विक संबंध हैं, जो उसकी सामरिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करते हैं।

**1. दक्षिण एशिया में भारत की भूमिका**

दक्षिण एशिया में भारत एक प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरता है। दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन के माध्यम से भारत क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक विकास और शांति को बढ़ावा देता है, साथ ही "Neighbourhood First" नीति के तहत पड़ोसी देशों के साथ संबंध मजबूत करता है।

**2. भारत-चीन संबंध**

भारत और चीन के संबंध सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों से प्रभावित हैं। व्यापारिक संबंध मजबूत होने के बावजूद सीमा विवाद और सामरिक प्रतिस्पर्धा दोनों देशों के बीच तनाव का कारण बने हुए हैं।

**3. भारत-अमेरिका संबंध**

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के संबंध हाल के वर्षों में रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित हुए हैं। रक्षा, व्यापार, प्रौद्योगिकी और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग इसके प्रमुख आयाम हैं।

**4. भारत-रूस संबंध**

भारत और रूस के बीच ऐतिहासिक रूप से मजबूत संबंध रहे हैं। रक्षा सहयोग, ऊर्जा क्षेत्र और सामरिक साझेदारी इन संबंधों के मुख्य स्तंभ हैं।

**5. भारत और यूरोपीय संघ**

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

यूरोपीय संघ के साथ भारत के संबंध व्यापार, निवेश, जलवायु परिवर्तन और प्रौद्योगिकी सहयोग पर आधारित हैं, जो वैश्विक स्तर पर साझेदारी को मजबूत करते हैं।

**6. "Act East Policy" और "Neighbourhood First"**

भारत की "Act East Policy" दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ आर्थिक और सामरिक संबंधों को बढ़ावा देती है, जबकि "Neighbourhood First" नीति पड़ोसी देशों के साथ सहयोग और विश्वास को मजबूत करने पर केंद्रित है।

इस प्रकार, भारत के क्षेत्रीय और वैश्विक संबंध उसकी विदेश नीति को एक संतुलित और बहुआयामी स्वरूप प्रदान करते हैं, जो उसे एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित करते हैं।

**भारत की विदेश नीति में समकालीन बदलाव**

भारत की विदेश नीति में समकालीन दौर में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं, जो वैश्विक राजनीतिक-आर्थिक परिवर्तनों, तकनीकी प्रगति और उभरते सामरिक परिदृश्यों से प्रेरित हैं।

- **आर्थिक उदारीकरण का प्रभाव**

  1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक और आर्थिक हितों पर केंद्रित हो गई। वैश्विक व्यापार, विदेशी निवेश और आर्थिक साझेदारियों को बढ़ावा देने के लिए भारत ने अपनी कूटनीतिक रणनीतियों को पुनः परिभाषित किया, जिससे उसकी वैश्विक आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।

- **वैश्वीकरण और डिजिटल कूटनीति**

  वैश्वीकरण के प्रभाव से भारत की विदेश नीति में डिजिटल कूटनीति का महत्व बढ़ा है। सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और तकनीकी साधनों के माध्यम से भारत वैश्विक संवाद, छवि निर्माण और कूटनीतिक संचार को अधिक प्रभावी बना रहा है।

- **इंडो-पैसिफिक रणनीति (Indo-Pacific Strategy)**

  इंडो-पैसिफिक रणनीति के तहत भारत ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपनी सामरिक और आर्थिक उपस्थिति को सुदृढ़ किया है। यह रणनीति क्षेत्रीय सुरक्षा, समुद्री मार्गों की सुरक्षा और साझेदार देशों के साथ सहयोग को बढ़ावा देती है।

- **क्वाड (QUAD) और बहुपक्षीय गठबंधन**

  क्वाड (भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया) के माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग को मजबूत किया है। इसके साथ ही, भारत अन्य बहुपक्षीय मंचों पर भी सक्रिय भूमिका निभाते हुए वैश्विक शासन और स्थिरता में योगदान दे रहा है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

इस प्रकार, समकालीन बदलावों ने भारत की विदेश नीति को अधिक गतिशील, तकनीकी रूप से सशक्त और रणनीतिक रूप से प्रभावी बना दिया है, जिससे वह वैश्विक मंच पर अपनी भूमिका को और सुदृढ़ कर रहा है।

**भारत की विदेश नीति की चुनौतियाँ**

भारत की विदेश नीति को अनेक जटिल और बहुआयामी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जो उसके राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और वैश्विक भूमिका को सीधे प्रभावित करती हैं।

- **चीन के साथ सीमा विवाद**

  भारत और चीन के बीच सीमा विवाद, विशेषकर वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर तनाव, भारत की विदेश नीति के लिए एक प्रमुख चुनौती है। यह न केवल सुरक्षा बल्कि कूटनीतिक संतुलन को भी प्रभावित करता है।

- **पाकिस्तान के साथ संबंध**

  भारत और पाकिस्तान के संबंध ऐतिहासिक विवादों, विशेषकर कश्मीर मुद्दे और सीमा पार आतंकवाद के कारण तनावपूर्ण बने हुए हैं, जो क्षेत्रीय स्थिरता के लिए चुनौती हैं।

- **आतंकवाद और सुरक्षा चुनौतियाँ**

  आतंकवाद भारत की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा है। यह न केवल सीमाई क्षेत्रों बल्कि वैश्विक मंच पर भी भारत की कूटनीतिक प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है।

- **ऊर्जा सुरक्षा**

  भारत की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताएँ उसे बाहरी स्रोतों पर निर्भर बनाती हैं। ऊर्जा आपूर्ति की स्थिरता और सस्ती उपलब्धता सुनिश्चित करना विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

- **वैश्विक शक्ति संतुलन**

  बदलते वैश्विक शक्ति संतुलन, विशेषकर संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और रूस के बीच प्रतिस्पर्धा, भारत के लिए संतुलित और स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखने की चुनौती प्रस्तुत करता है।

- **जलवायु परिवर्तन और वैश्विक दबाव**

  जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट और अंतरराष्ट्रीय दबाव भारत की विकास नीतियों और कूटनीतिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं, जिससे सतत विकास और वैश्विक दायित्वों के बीच संतुलन आवश्यक हो जाता है।

इस प्रकार, ये सभी चुनौतियाँ भारत की विदेश नीति को अधिक जटिल और रणनीतिक बनाती हैं, जिसके लिए संतुलित, दूरदर्शी और लचीले दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

निष्कर्ष

भारत की विदेश नीति का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह एक गतिशील, बहुआयामी और संतुलित नीति है, जो समय के साथ बदलते वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्यों के अनुरूप निरंतर विकसित होती रही है। स्वतंत्रता के पश्चात जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में स्थापित आदर्शवादी दृष्टिकोण—जैसे गुटनिरपेक्षता, पंचशील और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व—ने भारत को एक नैतिक और स्वतंत्र कूटनीतिक पहचान प्रदान की। हालांकि, शीत युद्ध की समाप्ति और आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक और हित-आधारित हो गई, जिसमें आर्थिक कूटनीति, सामरिक साझेदारियाँ और वैश्विक संस्थाओं में सक्रिय भागीदारी प्रमुख बन गई। 21वीं सदी में भारत ने "Act East Policy", इंडो-पैसिफिक रणनीति और बहुपक्षीय सहयोग के माध्यम से अपनी वैश्विक भूमिका को और सुदृढ़ किया है। इसके बावजूद, चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ तनावपूर्ण संबंध, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ अभी भी गंभीर बनी हुई हैं। इन परिस्थितियों में भारत ने सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखते हुए संतुलित कूटनीति अपनाने का प्रयास किया है, जिससे वह वैश्विक शक्ति संतुलन में अपनी स्वतंत्र स्थिति को कायम रख सके। अंततः, भारत की विदेश नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के संतुलन का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो न केवल राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वैश्विक शांति, सहयोग और सतत विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। भविष्य में, भारत की विदेश नीति की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि वह उभरती वैश्विक चुनौतियों का किस प्रकार प्रभावी ढंग से सामना करता है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी भूमिका को किस प्रकार और अधिक सशक्त बनाता है।

**संदर्भ**

1. आचार्य, ए. (2014). अमेरिकी विश्व व्यवस्था का अंत। पॉलिटी प्रेस।
2. बाजपेयी, के., बासित, एस., और कृष्णप्पा, वी. (संपादक)। (2014). भारत की भव्य रणनीति: इतिहास, सिद्धांत, मामले। रूटलेज।
3. , एस. (2010). भारत की विदेश नीति: पूर्वव्यापी और संभावना। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. हॉल, आई. (2019). मोदी और भारतीय विदेश नीति का पुनर्निर्माण। ब्रिस्टल यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. , एच. (2016). आग की लकीर: संघर्ष विराम उल्लंघन और भारत-पाकिस्तान तनाव की गतिशीलता। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. मैलोन, डी. एम. (2011). क्या हाथी नाचता है? समकालीन भारतीय विदेश नीति। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 6.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

7. मुनि, एस. डी. (2009). भारत की विदेश नीति: लोकतंत्र का आयाम। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. पंत, एच. वी. (2016). भारतीय विदेश नीति: एक अवलोकन। मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस।
9. राजा मोहन, सी. (2003). रूबिकॉन पार करना: भारत की नई विदेश नीति का निर्माण। पालग्रेव मैकमिलन।
10. सरन, एस. (2017). भारत दुनिया को कैसे देखता है: कौटिल्य से 21वीं सदी तक। जगर्नोट बुक्स।
11. सिंह, जे. (2013). भारत की विदेश नीति। पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
12. स्टुएनकेल, ओ. (2015). ब्रिक्स और वैश्विक व्यवस्था का भविष्य। लेक्सिंगटन बुक्स।
13. टेलिस, ए. जे. (2016). एक अग्रणी शक्ति के रूप में भारत। कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस।
14. र, सी. (2010). भारत की विदेश नीति। रूटलेज।
15. मियरशैमर, जे. जे. (2001). महान शक्ति राजनीति की त्रासदी। डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी।